पंजाब पब्लिक स्कूल, नाभा के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील का अभिभाषण

नई दिल्ली, 12 अप्रैल, 2010

देवियो और सज्जनो,
मेरे प्यारे विद्यार्थियो,

मुझे नाभा के पंजाब स्कूल के स्वर्ण जयंती समारोह में उपस्थित होकर प्रसन्नता हो रही है। अपनी स्थापना के विगत 50 वर्षों में इसने भारत के उत्कृष्ट आवासीय पब्लिक स्कूल के रूप में ख्याति प्राप्त की है। मैं आपकी घुड़सवारी के प्रदर्शन से बहुत प्रभावित हुई हूं। पांच नदियों की भूमि और समृद्धि व कीर्ति के प्रतीक पंजाब में इस स्कूल की स्थापना श्रेष्ठ शिक्षा के प्रसार के नेक मिशन के साथ की गई थी। यह पंजाब की मेरी पहली यात्रा है और मैं इस अवसर पर राज्य के सभी लोगों को अपनी हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक पीढ़ी की अपने युवाओं से उम्मीदें और अपेक्षाएं होती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिक्षा लोगों को सबल बनाने का सबसे सशक्त साधन है, इसलिए शिक्षा किसी भी राष्ट्र के लिए प्राथमिक क्षेत्र होता है। शिक्षा से व्यक्ति अपना भविष्य संवार सकता है और समाज तथा राष्ट्र निर्माण में योगदान कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति में कार्य करने और प्रगति करने के अवसर हासिल करने की समझ पैदा होती है। शिक्षा के बिना व्यक्ति दिशा सूचक रहित उस जलयान की तरह होता है जिसे यह नहीं पता होता कि वह बन्दरगाह पर कैसे पहुंचेगा। इस संदर्भ में, मुझे विवेकानन्द का यह संदेश याद आ रहा है। उन्होंने कहा था कि समुद्र में जो जहाज हवा के खिलाफ चलते हैं वही आगे बढ़ते हैं, जो हवा के साथ-साथ चलते हैं वे भटक जाते हैं। इसी प्रकार, शिक्षा से बच्चों को विश्व की जानकारी मिलती है और वे धरती व मानव जीवन, परिवार व समुदायों, देशों व क्षेत्रों के साझे भविष्य तथा सम्बन्ध को समझने

में मदद करते हैं। इसलिए शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य लोगों को अपने वातावरण और अन्य लोगों की आवश्यकताओं के प्रति जागरूक बनाना है। इससे वे जिम्मेदार पृथ्वीवासी और देश के जागरूक नागरिक बनेंगे।

स्कूल शिक्षा के केन्द्र हैं जहां भविष्य का निर्माण करने वाले बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करने का अवसर मिलता है और वे अपने कर्तव्यों व जिम्मेदारियों को निभाने के लिए तैयार होते हैं।

प्यारे विद्यार्थियों, मुझे विश्वास है कि अध्ययन करते समय आपको यह जानकारी अवश्य मिली होगी कि पृथ्वी के संसाधन सीमित हैं। हमारे लिए, आपकी पीढ़ी और भावी पीढ़ी के लिए इसकी उपलब्धता तभी हो सकेगी जब हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग समझदारी से करेंगे। मूल्यवान संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग से वे समाप्त हो जाएंगे। हमें पर्यावरण अनुकूल तरीके अपनाने चाहिए और अपशिष्ट से बचना चाहिए। अपनी पृथ्वी के संसाधनों का प्रयोग करने के साथ-साथ उन्हें बढ़ाने के प्रयास करने चाहिए। इसके लिए जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय प्रदूषण तथा जल और ऊर्जा की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने की चुनौतियों पर ध्यान देना जरूरी है। मैं कहना चाहूंगी कि आप सभी को अपने दैनिक जीवन में जब प्रयोग न कर रहे हों तो पानी का नल और बिजली का स्विच बंद कर देना चाहिए। यह काम बहुत आसान है लेकिन महत्त्वपूर्ण बहुत है। यदि हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति यह काम करे तो सोचिए कि कितनी विशाल मात्रा में जल और ऊर्जा को बेकार होने से बचाया जा सकता है।

अपनी आबादी में युवाओं की ज्यादा संख्या होने के कारण हमारे राष्ट्र को युवा कहा जाता है। देश के युवा होने के नाते, आपको अपनी दक्षता और ज्ञान से भारत को एक प्रगतिशील राष्ट्र बनाने के प्रयास में योगदान देने का लक्ष्य बनाना चाहिए। भारत को ऐसे शिक्षित नागरिकों की जरूरत है जिनमें नवान्वेषण और आविष्कार करने की क्षमता हो क्योंकि 21वीं शताब्दी में किसी राष्ट्र की प्रगति उसकी आबादी

के ज्ञान भण्डार से होगी। जब देश के 54 करोड़ युवा शिक्षित होंगे और दृढ़संकल्प के साथ देश के लिए कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से भारत शक्तिशाली देश के रूप में उभरेगा।

विद्यार्थी के रूप में, आपको राष्ट्र के निर्माण की अपनी भूमिका के लिए तैयार रहना चाहिए। स्कूल में अपना समय सर्वोत्तम तरीके से प्रयोग करना बहुत जरूरी है। जब आप पढ़ाई करते हैं तो मन लगाकर पढ़ें। सही शिक्षा और समझ के लिए यह जरूरी है। इसलिए अपने अध्ययन में जिज्ञासा की भावना रखिये। स्वतंत्र और रचनात्मक ढंग से सोचिये। अपने दैनिक जीवन में अनुशासित और व्यवस्थित बनिए। सहृदयता, सहिष्णुता और सौहार्द जैसे मूल्य अपनाइए ताकि मानव कल्याण की भावना जाग्रत हो। राष्ट्रीय समरसता की भावना को बढ़ाइए। यह विविध धर्मों, विश्वासों, भाषाओं, जातियों, समुदायों और विशाल भौगोलिक दूरियों वाले हमारे देश को एकता के सूत्र में बांधने के लिए जरूरी है। हमारे देश को जोड़ने के लिए अनेकता में एकता आवश्यक है। आपको उच्च विचार विकसित करने चाहिए। इसी प्रकार, क्षुद्र और संकीर्ण विचारों को त्यागिए क्योंकि ऐसी प्रवृत्तियां न तो आपके और न ही देश की प्रगति और समृद्धि के लिए लाभकारी हो सकती हैं।

आपको यह भी याद रखना चाहिए कि आपके व्यक्तित्व के समग्र विकास से ही आप जीवन के लिए तैयार हो पाएंगे। आपको खेलों और पाठ्येतर गतिविधियों में, जैसा कि आप कर रहे हैं, भाग लेना चाहिए। टीम के सदस्य के रूप में खेलने से लक्ष्य हासिल करने के लिए दूसरों के साथ काम करने की योग्यता पैदा होती है। किसी टीम में विभिन्न धर्मों और जातियों के खिलाड़ी हो सकते हैं परन्तु आप एक टीम हैं और आपका लक्ष्य है –जीत। इससे आप धर्मनिरपेक्ष बनते हैं। खेलों से आप अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करने और खिलाड़ी की सच्ची भावना के साथ जीत और हार दोनों को स्वीकार करने की शिक्षा मिलती है।

मुझे खुशी है कि पंजाब पब्लिक स्कूल, नाभा अपने विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा के साथ–साथ विविध गतिविधियों में शामिल होने के पूरे अवसर प्रदान करता

है। स्कूल के विभिन्न क्लब और सोसायटियां विद्यार्थियों में कला, प्रकृति अध्ययन, हाइकिंग, साइकिलिंग, फोटोग्राफी, संगीत आदि के प्रति रुचि जगाते हैं। मैं जानती हूं कि स्कूल के बैण्ड ने नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लिया था। गणतंत्र दिवस परेड के दौरान, हम देश की विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, परंपराओं और धर्मों का संगम देखते हैं और इससे हमें भारतीय होने का गौरव अनुभव होता है। मुझे उम्मीद है कि स्कूल के विद्यार्थी राष्ट्रीय समारोहों में भाग लेते रहेंगे।

आज के तेजी से बदलते हुए समाज में, शिक्षकों पर विद्यार्थियों को दुनिया की घटनाओं की जानकारी सही संदर्भ में देने की बड़ी जिम्मेदारी है। आपका कार्य बहुत दायित्वपूर्ण है क्योंकि आपको भावी नागरिक तैयार करने हैं। अभिभावक शिक्षक एसोसिएशनों के जरिए अभिभावकों से लगातार विचार-विमर्श करते रहना चाहिए तथा विद्यार्थियों के कल्याण की लगातार समीक्षा भी करनी चाहिए। मेरा मानना है कि राष्ट्र की शक्ति हमारे स्कूलों द्वारा तैयार श्रेष्ठ विद्यार्थियों पर टिकी हुई है। एक स्वस्थ माहौल में पले-बढ़े और श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी ही हमारे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के अग्रदूत हैं।

मुझे बताया गया है कि इस स्कूल के ऐसे बहुत सारे पूर्व विद्यार्थी हैं जिन्होंने सशस्त्र बलों, सिविल सेवाओं, सार्वजनिक जीवन, कारोबार, पत्रकारिता, चिकित्सा और अन्य क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन किया है। मुझे विश्वास है कि स्कूल अपने आदर्श वाक्य 'आगे बढ़ो और ऊँचे उठो' के द्वारा उच्च शिखर छूता रहेगा। मैं स्कूल के भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएँ देती हूँ और बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, मुख्याध्यापक, शिक्षकों और बच्चों को अपनी शुभकामनाएँ देती हूँ।

धन्यवाद।